Thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 12
सृष्टि संवत् 1960853116
21 जून 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 12, 18/21 जून 2015 तदनुसार 7 आषाढ़ सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

जितेन्द्रिय गृहस्थ धनियों का धनी

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

उशिक्पावको वसुर्मानुषेषु वरेण्यो होताधायि विक्षु।
दमूना गृहपतिर्दम आँ अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम्।।

-ऋ. १।६०।४

शब्दार्थ-उशिक्-कामनाओं वाला, **पावकः**-पवित्र, **वसुः**-वास देने वाला, **मानुषेषु+वरेण्यः**मनुष्यों में श्रेष्ठ, **होता**-दाता, **विक्षु**-प्रजाओं में। **अधायि**-लाया गया है। **ऐसा दमूनाः**-दान्त, जितेन्द्रिय, **गृहपति**-गृहस्थ, **दमे**-घर में, अथवा दमन के कारण, **रयीणां+ रयिपतिः**-सब धनियों का धनी तथा **अग्निः**-नेता, श्रेष्ठ, **आ+भुवत्**-सब प्रकार से होता है।

व्याख्या-इस मन्त्र में श्रेष्ठ पुरुष को ही गृहस्थाश्रम का अधिकार दिया गया है और जितेन्द्रिय गृहस्थ की महिमा वर्णन की गई है। गार्हस्थय का अधिकारी 'उशिक्' कामना वाला होना चाहिए, क्योंकि अकाम-कामनारहित की कोई क्रिया नहीं हो सकती। संसार में जो कुछ हो रहा है, सब कामना के कारण हो रहा है। जैसे कि मनु जी कहते हैं-

अकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्तत्कामस्य चेष्टितम्।।-मनु० २।४

निष्काम की कहीं कोई क्रिया नहीं दिखाई देती, जहां कहीं भी कोई क्रिया है, सब कामना से है।

गार्हस्थ्याभिलाषी को पवित्र होना चाहिए। अपवित्र दुराचारी को इस आश्रम का अधिकार नहीं। मनु जी ने कहा है-'**अधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः**' दुर्बल इन्द्रिय वालों को गृहस्थाश्रम धारण करने का अधिकार नहीं और '**अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममा-विशेत्**' अखण्डित ब्रह्मचर्य वाला गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हो। वह दाता और वसु भी होना चाहिए।

यस्मात् त्रयोप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्जयेष्ठाश्रमो गृही। -मनु० ३।७८

चूंकि तीनों ही आश्रमियों-ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और सन्यासी-को गृहस्थ ही दान और अन्न के द्वारा प्रतिदिन पालता है, इसलिए गृहस्थाश्रमी ज्येष्ठ है। ब्रह्मचारी गृहस्थ से उत्पन्न होता है, वानप्रस्थ और सन्यासी भी सामान्यतः गृहस्थ से होते हैं, अतः गृहाश्रम ज्येष्ठ हैं। वेद ने इसको इन शब्दों में कहा है-'**वसुर्मानुषेषु वरेण्यो होताधायि विक्षु**'-बसाने वाला, मनुष्यों में श्रेष्ठ दाता प्रजाओं में लाया गया है।

गृहस्थ-गृहपति को दान्त-जितेन्द्रिय होना चाहिए। कईयों का भ्रम है कि गृहस्थ होने से उन्हें ब्रह्मचर्यभङ्ग का आदेशपट्ट मिल गया है। अतिप्रसक्ति से मनुष्य हीनवीर्य और दुर्बलेन्द्रिय हो जाता है। दुर्बलेन्द्रिय मनुष्य से गार्हस्थ्य का निर्वाह नहीं हो सकता। मनुजी कहते हैं-

स संधार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः।।

-मनु. ३।७९।

अक्षय सुख और संसारमुख के अभिलाषी को यह गृहस्थाश्रम प्रयत्न से धारण करना चाहिए, क्योंकि दुर्बलेन्द्रिय मनुष्य इसको धारण नहीं कर सकते।

गृहस्थाश्रम एक छोटा-सा संसार है। इस संसार को पालने के लिए बड़ी शक्ति चाहिए। शक्ति ब्रह्मचर्य और इन्द्रियदमन से प्राप्त होती है, अतः मनुजी कहते हैं-

ऋतुकालाभिगामी स्यात्स्वदारनिरतः सदा।।४५।।
ब्रह्मचार्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्।।५०।।

-मनु. ३।४५,५०

गृहस्थ यदि ऋतुकालाभिगामी हो और अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी से रत न हो, जिस-किसी स्थान में रहता हुआ ऐसा गृहस्थ ब्रह्मचारी ही होता है।

ऐसा जितेन्द्रिय गृहस्थ सचमुच-

'**भुवद्रयिपति रयीणाम्**'-धनियों का भी धनी होता है।

ब्रह्मचर्य-धन के समान और कोई धन नहीं है। अन्तिम वाक्य से ऐसी ध्वनि निकलती प्रतीत होती है कि दरिद्र को विवाह का अधिकार नहीं है। है भी ठीक, जिसके पास भरण-पोषण का सामान नहीं है, वह इस व्यवयसाध्य आश्रम का अधिकारी कैसे हो सकता है ? विवाह के समय वधू को वर कहता है-'**ममेयमस्तु पोष्या**' तेरा पालन मैं करूंगा। दरिद्र का ऐसा कहना विडम्बना ही है।

-स्वाध्याय संदोह से साभार

Thearyasamaj.org

वेदों में दान-दक्षिणा की महिमा

-ले० मृदुला अग्रवाल, 19 सी सरत बोस रोड, कोलकाता

सर्वप्रथम सृष्टि का ''महान दानी'' स्वयं परमेश्वर है- ''आनन्ददाता परमेश्वर'' उसके दान कल्याणकारी होते हैं। आत्मिक आनन्द देते हैं। उसने हमें मनुष्य जन्म देकर, माता-पिता, विद्वानों आदि से उपकृत करके सबसे महान् दान किया है। हमारे लिए चारों वेदों का ज्ञान प्रवाहित किया है। सृष्टि के प्रत्येक जीव पर उपकार करने के लिए प्रकृति के पांच तत्व- आकाश, वायु, जल, पृथिवी, अग्नि का सृजन किया। अहंकार और मन को भी सृजा है। ईश्वर ने हमारे लिए यह समस्त संसार व ब्रह्माण्ड को, अद्भुत प्रकाश वाले सूर्य को, प्राण-रक्षा के लिए अन्न को, निरोगी काया रखने के लिए औषधि एवं वनस्पति को, छाया एवं ईंधन के लिए वृक्ष को, दूध के लिए गाय को, पशु-पक्षी, भूमि, आश्रय, धन-ऐश्वर्य, विद्यायुक्त विज्ञान आदि सभी कुछ 'दान' में दिया है। वही हमारे कर्मों के अनुसार हमें जीवन प्रदान करता है-''कर्मफलदाता''-

''जो मनुष्यों में अमररूप से तथा सारी प्रजा में आनन्दस्वरूप, दो प्रकार के गुणों से उत्तम सदा विराजमान है। उस साहस के उत्पादक और सर्वज्ञ परमेश्वर की उत्तम पदार्थों को उसके दान द्वारा प्राप्त करने के लिए स्तुति करता है।'' -सामवेद, मन्त्र-१५५५

हम आशा करते हैं कि ईश्वर की तरह हम मनुष्य भी दानी एवं उपकारी बनें, न कि सिर्फ स्वयं के लिए जिएं। हमारा प्रिय परमेश्वर हमारे मन को दान देने की प्रेरणा देता है। वह निश्चित रूप से दानी मनुष्य का कल्याण करता है तथा उसे सर्वसुख भी प्रदान करता है। उस निष्पाप और पर्याप्त दान करने वाले परमेश्वर की निरन्तर उपासना करनी चाहिए।

''जैसे अग्नि गौ के घृत, काष्ठ आदि हवन सामग्री से प्रज्वलित होकर, हवन, अन्न संस्कार, शिल्प प्रयोग आदि में उपयोगी होता है, वैसे ही परमेश्वर वेद-विद्या के और बुद्धि, अन्न आदि के दान से मनुष्यों पर उपकार करता है। इसी प्रकार मनुष्यों को भी परस्पर उपकारी होना चाहिए।''

-अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-13, मन्त्र-1

कुछ लोग तो सचमुच दानी होते हैं और कुछ अपयश के भय से दान करते हैं। कुछ योग्यजन प्रकृति से दक्षिणा प्राप्त कर लेते हैं। जैसे वैज्ञानिकों ने खोजकर भूमि से तेल निकाला, जलप्रपात से बिजली प्राप्त करी और अरबों रुपयों की दक्षिणा प्राप्त कर रहे हैं।

सूर्य का प्रकाश एवं इन्द्र का ऐश्वर्य प्रकट होकर जीवों को अन्धकार से पूर्ण रूप से मुक्त कर देता है, जिससे उन्हें दक्षिणा का विस्तृत मार्ग प्रत्यक्ष दिखाई देने लगता है। जो शुक्र के तीन अंगों (ब्रह्मचर्य, प्राणायाम, सत्संग) को जानता है, जिसने प्रथम दक्षिणा से सेवा करी-उसको ही ऋषि, उसको ब्रह्मा, उसे यज्ञ का नेता, साम गाने वाला, वेद-स्त्रोत पढ़ने वाला कहते हैं। यहां भी दान की महिमा का वर्णन है।

दक्षिणा घोड़ा, दक्षिणा गाय देती है। दक्षिणा चांदी और जो सुवर्ण है उसे देती है। दक्षिणा अन्न देती है। जो हमारा अन्त:करण है विशेष ज्ञान रखता हुआ दक्षिणा को कवच बना लेता है। यहां दक्षिणा का भाव है दक्ष बनना, योग्य विद्वान् होना, योग्यता से सब कुछ मिलता है। योग्यता धर्म है।

किसी की योग्यता के अनुसार उसे धनादि देना ही दक्षिणा कहलाती है। यह प्रथा बहुत उत्तम है। इससे सैंकड़ों दुर्भावनाएं दूर होंगी। दानी में उदात्त भावना जागेगी। लेने वाले में

''दान दक्षिणा देने वाले जन स्वर्ग में उच्च पद पर स्थित होते हैं। जो घोड़ा दान देने वाले हैं वे सूर्य के साथ स्थित होते हैं। जो सुवर्ण के देने वाले हैं। वे मोक्ष को प्राप्त होते हैं। अच्छी वृत्ति वाले जन, वस्त्र देने वाले लम्बी आयु पाते हैं।

-ऋग्वेद, मंडल-१०, सूक्त-१०७, मन्त्र-२

दानी पुण्यात्माओं को सुन्दर सवारी, उत्तम पत्नी या उत्तम पति, बढ़िया घर आदि भौतिक सुख प्राप्त होता है। लेकिन आध्यात्मिक सुख तो तब मिलता है जब सब मनुष्य ऐसा सुप्रबन्ध करें कि दीन-दुखियों का यथावत् पालन हो, उद्योगी दानी पुरुष और किसान लोग अन्न आदि प्राप्त करें। सब लोग शतहस्त होकर उत्तम रीति से वस्तुओं को प्राप्त करें एवं सहस्त्रहस्त होकर उन वस्तुओं का दान करें। ''शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं फिर'' - अथर्ववेद, ३।२४।५।।

वैदिक सिद्धान्त में जमा करने की अपेक्षा दान उत्तम है, वह भी सुपात्र को कुपात्र को नहीं।

गीता के 16वें अध्याय के 20वें श्लोक में जिस प्रकार कहा है-

''दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशेकाले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकम्, स्मृतम्।।'' अर्थात्-दान देना ही कर्त्तव्य है-ऐसे भाव से जो दान देश-काल एवं पात्र को देखकर नि:स्वार्थ भाव से बिना प्रत्युपकार की इच्छा से किया जाता है। वह सात्विक दान कहलाता है।

अथर्ववेद-१?३०।४ में भी कहा है-''जो धर्मात्मा विद्वान् पुरुष स्वार्थ छोड़कर दान करते हों और सब संसार के हित में दत्तचित्त हों, राजा उन महात्माओं को चुनकर राजसभा का सभासद् बनावे।''

''जैसे सूर्य और चन्द्र परस्पर आकर्षण से, दिन और रात, प्राण और अपान, अपने-अपने क्रम से और शूर विद्वान् पुरुष नियम पर चलने से संसार का उपकार करते हैं, इसी प्रकार ऐश्वर्यवान् राजा विचारपूर्वक सुपात्रों को दान देकर प्रजा की उन्नति करें।''

-अथर्ववेद, ३।४।४।

ऐसा करने से उस प्रजा पालक राजा को यश रूपी जीवन, पीड़ा रहित गति, सब लोकों की सम्पदा, उत्तम योनि, युद्ध जीतने के सब साधन प्राप्त होते हैं। उसकी सारी विपत्तियां दूर हो जाती हैं और अगला जन्म भी उत्तम परिस्थितियों वाला होता है।

''हे परमात्मादेव! तू हमारे बुद्धितत्व का पूर्णकर्त्ता, इन्द्रियों में शक्ति का दाता, कूप के समान तृप्ति करने वाला तथा ज्योति:स्वरूप है। तेरे दान का कभी नाश नहीं होता। हे भगवन्! मैं जो जो चाहूं उसे पूर्ण कर''। - सामवेद, मन्त्र १५-८० हे दु:खहर्त्ता परमेश्वर! जो लोग उत्तम धन का दान करते हैं उनको दु:खों से पार करा। मनन-शक्ति मन में और ग्रहण शक्ति हृदय में-दोनों को दान-क्रियाओं से भरते हुए संकल्प को हमें दे। देने की इच्छा न रखने वाले से भी दान दिलावे। हे दानशील! तू हममें से दानशील पुरुष को दान के लिए धन भेज। प्राण-वायु एवं सुन्दर वाणी से हमें पोषण देता रह। नरों के हितकारी, संग्रामों को जीतने वाला, सत्य वाणी वाले, यश के लिए, जिस अग्नि (ईश्वरीय तेज) को दानी ठीक से जानते हैं, उनको यह दान आत्म समर्पण होवे।

दानी सब प्रकार से आदर के योग्य होता है। उसे यश की प्राप्ति होती है और उसका जीवन आनन्दमय होता है। दान देना मनुष्य जीवन का स्वाभाविक धर्म है। दान करने से धन घटता नहीं बढ़ता ही है। जिसका मन और प्राण वश में है वही सबको दान दे सकता है। वह योगी दान देता हुआ शास्त्रादि व ज्ञान की कामना भी कर सकता है।

दान का आत्मिक-आनन्द मेरे जीवन में एक छोटी सी घटना से बड़ा सिद्ध होता है। एक दिन घर में कुछ मिस्त्री काम कर रहे थे। करीब 4-5 घण्टों की कड़ी मेहनत की। रात के 10 बजे वे भूखे-प्यासे अपने-अपने घरों को जा रहे थे। घर में खाना उठ चुका था। सुबह के नाश्ते के लिए कुछ आलू की टिकिया बना कर रखी थीं। मन में यह ख्याल आया कि बेचारे कब घर पहुंचेंगे उन्हें कुछ खिला दूं। मैंने उन्हें आलू की टिकिया, पावरोटी पर रखकर खिला दी और पानी पिलाया। वे सब सचमुच थके हुए खा-पीकर तृप्त हुए। उन्हें उस दिन खिलाकर मुझे जो मानसिक शान्ति प्राप्ति हुई उसका वर्णन करना कठिन है। परन्तु शायद इसे ही आत्मिक-आनन्द व दान जैसा शुभ-कार्य कह सकते हैं। हमारे मानव-जीवन में दान-दक्षिणा की महिमा ही विलक्षण है।

Thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

योग का विरोध करने वाले-विकृत मानसिकता के शिकार

योग का मुख्य उद्देश्य चित्त की एकाग्रता द्वारा आत्मिक, मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों का विकास करना और आत्म साक्षात् द्वारा परम आत्मा तक पहुंचना है। योग का सीधा अर्थ है-जोड़ना। गीता के अनुसार कर्म कुशलता ही योग है। मनुष्य और ब्रह्माण्ड के एकात्म दर्शन का यह विज्ञान दर्शन भारत में उगा। दुनिया के अनेक देशों ने अपनाया और इसे योग के बजाय योगा कहा। । आधुनिक रहन-सहन से तनाव और बीमारियां बढ़ रही हैं। योग तन-मन को स्वस्थ रखने की दिनचर्या का साधन है। योग विश्व को भारतीय ज्ञान साधना का अनूठा उपहार है। हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र में योग दिवस का प्रस्ताव रखा। 21 जून अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित हुआ। इस प्रस्ताव को 170 देशों का समर्थन मिला जिसमें 47 मुस्लिम देश हैं। इन 47 देशों सहित 191 देशों में योग दिवस मनाने की तैयारी है। अकेले अमेरिका में 100 शहरों में ऐसे आयोजन होंगे। भारत स्वाभाविक ही योग विज्ञान की अन्तरराष्ट्रीय महत्ता और मान्यता से आनंदित है। केन्द्र सरकार ने भारत में भी 21 जून को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का निश्चय किया है।

हमारे शास्त्रों में योग को जहां आत्मिक, मानसिक तथा बौद्धिक उन्नति का उपाय बताया है वहां शारीरिक उन्नति का भी सर्वोत्तम तथा अचूक उपाय बताया गया है। हमारे देश में राजनीतिक दलों के द्वारा जिस प्रकार से योग दिवस का विरोध किया जा रहा है, उससे उनकी मानसिक विकृति का अनुमान लगाया जा सकता है। राजनीतिक दलों के द्वारा विरोध की प्रवृत्ति का प्रदर्शन पहले से होता आ रहा है परन्तु योग दिवस को लेकर जिस प्रकार का विरोध ये लोग कर रहे हैं इससे पता चलता है कि विरोध करना इनका स्वभाव बन गया है। योग को धर्म और राजनीति के साथ जोड़ कर देखा जा रहा है। लोकसभा चुनावों में करारी हार को अभी तक वे पचा नहीं पाए हैं। इस कारण वे चाहे जन कल्याणकारी नीतियां हों, योग दिवस हो या फिर म्यांमार में भारतीय सेना द्वारा की गई सफल कार्रवाई हो। इन्हें किसी भी कार्य में कोई अच्छाई नजर नहीं आती। इन लोगों को नरेन्द्र मोदी का विरोध करना है क्योंकि वे एक चाय बेचने वाले आम व्यक्ति को प्रधानमन्त्री के पद पर नहीं देखना चाहते थे। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के कारण हमारे देश का रूतबा बढ़ा है, वे इस बात को मानने के लिए तैयार ही नहीं हैं। हर घटना को केन्द्र सरकार के साथ जोड़ कर देखा जा रहा है। नरेन्द्र मोदी के बढते प्रभाव से विरोधी दलों की हताशा को देखा जा सकता है। वे किसी भी कीमत पर श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमन्त्री के रूप में सफल नहीं देखना चाहते हैं। इसीलिए मनुष्य जीवन के लिए हितकारी योग का भी विरोध किया जा रहा है। उसे एक धर्म विशेष के साथ जोड़ कर देखा जा रहा है।

बड़ी विचित्र बात है कि योग जैसी महत्वपूर्ण जीवनशैली को धर्मों के कोल्हू में पीसा जा रहा है, जबकि योग सभी धर्मों से परे सेहतमंद रहने का एक मूलमन्त्र है। कुछ संकीर्ण धर्मगुरूओं तथा राजनेताओं ने योग के विरूद्ध बयान देकर अपने आपको मजाक का पात्र बनाया है। योग किसी भी धर्म का विरोध करने की क्रिया का नाम नहीं है। योग दु:ख दूर करने का विज्ञान है। योग में दर्शन और विज्ञान साथ-साथ है। इन विरोध करने वालों को इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि जिन देशों ने योग दिवस मनाने को सहमति दी है उनमें 47 मुस्लिम देश हैं। इनमें अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, बांग्लादेश, यमन, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, सीरिया आदि भी हैं। विरोध करने की भी एक सीमा होती है। राष्ट्र के अहित में बनने वाली नीतियों का विरोध करना विपक्षी दलों का काम होना चाहिए। इससे उनकी सजगता का पता चलता है कि उन्हें देश की कितनी चिन्ता है। विरोध करने की प्रवृत्ति हमारी स्वाभाविक नहीं होनी चाहिए। किसी एक व्यक्ति को लक्ष्य करके हमारा विरोध नहीं होना चाहिए। आज जो राजनीतिक दल योग दिवस मनाने का विरोध कर रहे हैं, वो राष्ट्रहित में नहीं है और उन्हें ऐसा राष्ट्र विरोधी कार्य करने से बचना चाहिए। देश की जनता जानती है कि योग दिवस को मनाना उनके हित में है या नहीं। इसलिए व्यर्थ की बयानबाजी को बन्द करके ऐसे अवसरों पर सभी राजनीतिक दलों को सरकार का साथ देना चाहिए। जिन कार्यों के द्वारा देश का नाम होता है, गौरव बढ़ता है तथा विश्व में भारत का नाम होता है, ऐसे कार्यों का विरोध उचित नहीं है। ये विपक्षी दल योग से बनने वाली हमारी वैश्विक पहचान पर ही कुठाराघात कर रहे हैं। सम्पूर्ण भारत के लिए ये गौरव के पल हैं जब हमारी भारतीय संस्कृति और जीवनपद्धति को पूरे विश्व में मान्यता मिल रही है। दुर्भाग्य की बात यह है कि इस योग दिवस का विरोध अन्य देशों को छोड़कर अपने ही भारत देश में हो रहा है। इसके खिलाफ तर्क देने वाले यह कह रहे हैं कि इसे जबरन थोपा जा रहा है। सवाल यह है कि योग दिवस मनाने से नुकसान क्या है? इसे किसी धर्म के साथ जोड़ा जाना नासमझी है। शरीर को निरोग रखने के लिए यदि योग का सहारा लिया जा रहा है तो अच्छा ही है कि हम बिना किसी दवाई के फिट रहें। इसके विरोध में जो लोग बोल रहे हैं उन्हें यह विचार करना चाहिए कि योग तो ऐसी चीज है कि बिना किसी खर्च के हम चुस्त दुरूस्त रह सकते हैं और करोड़ों अरबों रूपये जो दवा पर बर्बाद होते हैं उनका इस्तेमाल किसी और बेहतर काम में किया जा सकता है।

योग के अनुसार संकल्प, विकल्प, राग, द्वेष और अवसाद का केन्द्र मन है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने मन को शरीर का सूक्ष्म हिस्सा माना है। मन की क्षमता विराट है। इस योग साधना से ही मन को वश में किया जा सकता है। चित्त की वृत्तियों का विरोध करना ही योग है। यहां कोई अन्धविश्वास नहीं है। ऋग्वेद से लेकर गीता और पतंजलि तक योग की वैज्ञानिक अविरल धारा है। स्वस्थ शरीर और एकाग्र मन की परिभाषा है। योग साधारण व्यायाम नहीं। योग सुसंबद्ध विज्ञान है। इसके चार चरण हैं-समाधि, साधना, विभूति और कैवल्य। आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। पतजंलि के ये सूत्र वैज्ञानिक हैं। योग के द्वारा व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का विकास होता है। योग के द्वारा जहां शरीर को निरोग और स्वस्थ बनाया जा सकता है वहीं मानसिक विकारों को भी शुद्ध किया जा सकता है। योग का विरोध करने वालों की मानसिकता में जो विकार आ गया है, उसे भी योग के द्वारा दूर किया जा सकता है।

अन्त में केवल मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि योग का विरोध करने वाले योग करें और उसके परिणामों को देखें। उसके पश्चात किसी निर्णय पर पहुंचे। अगर योग करने से उनकी मानसिकता में सुधार होता है, उन्हें मानसिक शान्ति मिलती है, शरीर स्वस्थ होता है और बुराईयां दूर होती हैं तो उन्हें व्यर्थ के विवाद से बचना चाहिए। राष्ट्र की इन उपलब्धियों पर इन्हें गौरव करना चाहिए। ऐसे लोगों को इस बात का गर्व होना चाहिए कि दुनिया के अधिकतर देशों ने हमारा समर्थन किया है और योग को एक वैश्विक दर्जा दिया है। देश के लिए जन हितकारी कार्यों में अगर विपक्षी दल भी समर्थन करेंगे तो जनता उनकी सराहना करेगी। व्यर्थ की आलोचना करके अपने आपको राष्ट्र विरोधी सिद्ध नहीं करना चाहिए। अपने घर में खुद ही आग लगाएंगे तो बाहर वाला उसे बुझाने क्यों आएगा? इसलिए राष्ट्र के हित के लिए कार्य करना, वक्तव्य देना, लोगों को सही मार्ग दिखाना प्रत्येक नागरिक का, सरकार का, विपक्षी दलों का कर्त्तव्य है। सकारात्मक मुद्दों पर हमारा रवैया सहयोगात्मक होना चाहिए। राष्ट्रहित के सभी मुद्दों पर हम सभी एकमत होकर कार्य करें। चाहे हमारा सम्बन्ध किसी भी राजनीतिक दल से हो। उद्देश्य हमारा निस्वार्थ भाव से राष्ट्र का हित होना चाहिए। राष्ट्र के कल्याण के लिए हमें निजी स्वार्थों को त्याग देना चाहिए।

प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

Thearyasamaj.org

यज्ञ समिधा

-ले० पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फाजिल्का,
मो० 94634-28299

(गतांक से आगे)

इस प्रकार पंचमहायज्ञों को करते हुए प्रतिदिन पीपल की समिधा और घी, सामग्री नित्यकर्म की सोलह आहुतियों के साथ ऋग्वेद के मन्त्रों से भी यज्ञ करें।

तस्मात् समिद्धेहोतव्यं नासमिद्धे कदाचन।

आरोग्यमिच्छतायुश्च श्रियमात्यन्तिकीं पराम्।।

-कात्यायन स्मृति ९/१३

इसलिए आरोग्यता, आयु और अत्यन्त श्रेष्ठ लक्ष्मी की इच्छा करने वाला, पुरुष भली भांति जलती हुई अग्नि में हवन करें और बिना जलती हुई अग्नि में हवन कभी न करें।

यदा लोलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने।

तदाज्यभागावन्तरेणाहुतिः प्रतिपादयेत्।।

-मुण्डकोपनिषद्

जब अग्नि भलीभांति जल चुके और उसकी लपटें उठने लगें, तब उसमें आहुदियां देनी चाहिएं।

योऽनर्चिषि जुहोत्यग्नौ व्यङ्गा-राणि च मानवः।

मन्दाग्निरामयावी च दरिद्रश्चापि जायते।

तस्मात् समिद्धे होतव्यं नासमिद्धे कदाचन।।

-छान्दोग्य परिशिष्ट

जो मनुष्य बिना प्रज्वलित, बिना अंगार की अग्नि में आहुति देता है, वह मन्दाग्नि आदि उदर रोगों का दुःख पाता है। इस लिए प्रज्जवलित अग्नि में ही आहुति देनी चाहिए।

प्रस्तुत प्रमाणों से स्पष्ट है कि तीव्र प्रज्वलित अग्नि में ही आहुति देनी चाहिए। जो कि रस युक्त समिधाओं में अग्नि का प्रज्वलित होना सन्दिग्ध है।

रोगनाशार्थ समिधा

रचनाभेद के कारण लकड़ियों के गुणों में भी भेद होता है। उनके औषधीय गुण भी अलग-अलग होते हैं। अतः चिकित्साशास्त्रियों ने रोगानुसार भी समिधाओं के प्रयोग का विधान किया है-

''विज्ञान के मूलस्रोत अथर्ववेद द्वारा रोगानुसार चयनित समिधा, सामग्री और गोघृत से रोगों का जड़ से सफाया करने के लिए अग्निहोत्रीय चिकित्सा अपनाइए।''

त्रिदोषनाशक अग्निहोत्रविधिः पृ०14

निर्देश-अन्त में समिधाएं तैयार करने हेतु निर्देश भी हैं-

''रोगानुसार बताई गई समिधाओं को एक सप्ताह पूर्व वृक्ष से ताजी कटवा कर छाया में सुखा कर अथवा हल्की धूप में सुखा कर छिलके सहित रख लीजिए। ध्यान रहे समिधा रसों से युक्त होनी चाहिए, तभी यज्ञ से चमत्कारिक सफलता मिलेगी।'' -पृष्ठ ५९

रोगानुसार समिधाएं

लेखक ने रोगानुसार समिधाओं का भी उल्लेख किया है, जिनमें से प्रसिद्ध समिधाओं को ही यहां पर प्रस्तुत किया जा रहा है। ये सभी समिधाएं छिलकायुक्त होना चाहिए-

1. श्वास रोग-गूलर, पीपल, बेर, पलाश।
2. गठिया रोग-गूलर, बेर, पीपल।
3. गुप्त एवं यौन रोग नाशक-गूलर, पलाश, अशोक, बड़, शमी।
4. गुर्दा रोग-गूलर, बेल, नीम, बेर।
5. बवासीर-पलाश, शमी, गूलर।
6. कैंसर-गूलर, बड़, आम।
7. शोथहर-बड़, पलाश, बेर।
8. सिरदर्द नाशक-आम, गूलर, बड़।
9. विषम ज्वर नाशक-आम, पीपल, बेर।
10. खसरा नाशक-बड़, गूलर, नीम।
11. चेचक नाशक-बड़, गूलर, नीम।

इस प्रकाश 24 रोगों की समिधाएं थोड़े अन्तर के साथ यहीं हैं। अतः विस्तार भय से उन्हें यहां नहीं दिया जा सकता।

डॉ० रामप्रकाश ने 'यज्ञ विमर्श' में पृष्ठ 28-29 पर पलाश, पीपल, बड़, गूलर, चन्दन, अशोक आदि के औषधीय गुणों का विस्तृत वर्णन किया है।

निष्कर्ष

1. समिधाएं अच्छी प्रकार जलने वाली तथा सूखी हों जिससे बीच में बुझे नहीं।
2. अधिक गुणकारी होने से यदि समिधा त्वचा सहित छालयुक्त हो तो अत्युत्तम है। पर अत्याधिक पुरानी लकड़ी का छिलका गल जाता है। अतः ऐसे छिलके को उतार देना ही अच्छा है क्योंकि वह धुआं अधिक देता है।
3. यदि छिलकायुक्त समिधा न मिले तो फटी-फटी छिली भी ग्राह्य है। यह देश (स्थान), काल के अनुसार उपलब्धता पर निर्भर है। स्वच्छता का अवश्य ध्यान रखें।
4. कई विद्वानों ने शास्त्रों के प्रमाण देकर अंगूठे के बराबर मोटी समिधाओं का विधान किया है। यदि हवनकुण्ड छोटा हो तब तो यह विधि ठीक है। परन्तु हवनकुण्ड बड़ा होने पर अर्थात् सामूहिक बृहदयज्ञ होने पर अपेक्षाकृत आवश्यकतानुसार मोटी भी होनी चाहिए, जिससे देर तक जल के, बुझे नहीं। फिर भी अग्नि प्रज्जवलित करने के लिए छोटी पतली समिधाएं भी होनी चाहिएं। इससे सिद्ध होता है कि छोटी-बड़ी, मोटी-पतली हवन कुण्ड के आकार-प्रकार की होनी चाहिए।
5. समिधादान के लिए आठ-आठ अंगुली की तीन अथवा अधिक समिधाएं पहले से ही आवश्यकतानुसार काट कर रख लेनी चाहिएं।

परन्तु यदि हवन कुण्ड ही 4, 6, 8 अंगुल लम्बा-चौड़ा हो तो समिधाओं के उपर्युक्त सारे परिमाण बदल जाएंगे। तब तो अंगूठे से भी पतली और बिल्कुल छोटी समिधाओं की आवश्यकता होगी।

ऐसे हवन कुण्ड तांबे के बने बनाए मिल जाते हैं। अतः घर पर व्यक्ति गत रूप से हवन करने वालों के लिए यह अत्यन्त उपयुक्त है।

6. समिधाएं मलिन देशोत्पन्न, घुन-दीमक आदि कीड़ा लगी, सड़ी-गली, लताओं से लिपटी, पक्षियों के घोंसले अथवा कोटर वाली, पक्षियों के बीट सदृश अपवित्र पदार्थों से दूषित न हों।
7. समिधाएं ऐसी हों जिन्हें जलाने पर दुर्गन्ध न निकले और अधिक धुआं न हो।
8. समिधा जलकर राख बनने वाली हो, कोयला नहीं।
9. समिधाएं स्थान के अनुसार भिन्न-भिन्न वृक्षों की मिलती हैं, निर्देशानुसार जहां, जैसी उपलब्ध हों, तदानुसार प्रयोग करें। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने अनेक वृक्षों की समिधाएं का विधान किया है।
10. चन्दन का एतादृश सुगन्धित वृक्षों की समिधाएं काफी महंगी होती हैं। अतः उनका एकाध गुटका लेकर उसकी तीन या अधिक समिधाएं बनाई जा सकती हैं।
11. जहां बादाम के वृक्ष हैं, वहां उनकी समिधाओं का प्रयोग किया जा सकता है। बिल्कुल छोटे हवनकुण्ड में तुलसी की समिधाएं भी उपयुक्त हैं।
12. समिधाएं पत्तों अथवा अनेक शाखाओं से युक्त एवं टेढ़ी-मेढ़ी न हों।
13. रसयुक्त अर्थात् गीली समिधाएं सामूहिक रूप से उपयोगी नहीं, चिकित्सा शास्त्री के लिए व्यक्तिगत रूप से भले ही हों।
14. प्राचीन कथनानुसार करीष अर्थात् गोबर के उपलों का भी समिधा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है परन्तु यह विधि व्यावहारिक रूप में नगण्य ही समझना चाहिए।

समिधा-शुद्धि

विचारणीय विषय-विद्वद्वृन्द ने यथावत्तर छोटी-बड़ी, मोटी-पतली, सूखी, रसयुक्त विभिन्न वृक्षों की समिधाओं के प्रयोग के सम्बन्ध में अनेक ग्रन्थों के प्रमाण देकर अपनी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। फिर इन विद्वानों ने समिधा की शुद्धि हेतु अग्रलिखित प्रमाण की उपेक्षा क्यों कर दी ? यह चिन्त्य है।

शतपथ ब्राह्मण के 'संस्काराध्याय' में समिधाओं को संस्कृत करने के लिए उसके धोने, अभिषिञ्चित करने का विधान है-

प्रोक्षणीरहवर्युरादत्ते। स इध्ममवाग्रे प्रोक्षति-''कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये...इत्यादि मन्त्र बोलते हुए समिधाओं का अभिषिंचन करता है। इस प्रोक्षण कर्म द्वारा समिधाओं को यज्ञ कर्म के अनुरूप संगमनीय पावन और पवित्र बनाया जाता है।

यहां ''कृष्णोऽस्याखरेष्ठः....।'' इस मन्त्र से प्रोक्षण के लिए कहा गया है। यह मन्त्र यजु. 2/1 से शतपथ में उद्धृत किया गया है।

महर्षि दयानन्द ''संस्कार विधि'' के सामान्य प्रकरण में चरु अर्थात् होम के लिए पाक बनाने की विधि में लिखते हैं-

ओम् अग्नये त्वा जुष्टं निर्वपामि।। आश्व. गृ. 1/10/6

अर्थात् जितनी आहुति देनी हो..।

ओम् अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।। यजु. 1/13, 2/1

अच्छे प्रकार जल से धो के...।

जिस प्रकार महर्षि ने चावल धोने के लिए यजु. 1/13, 2/1 मन्त्र का प्रयोग किया है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

Thearyasamaj.org

महान् बनने के लिए इनको मिला, परिवार के किसी एक सदस्य का सहयोग

-ले० श्री खुशहाल चन्द्र आर्य 180 महात्मा गांधी रोड़ कलकत्ता

जब हम अपने गौरव शाली इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि अधिकतर महापुरुषों को महान बनने में उनके पूरे परिवार का सहयोग होता है, जैसे श्री राम चन्द्र जी को महान् बनाने में उसकी धर्मपत्नी सीता, भाई भारत व लक्ष्मण, माता कौशल्या, माता कैकेयी, हनुमान जी, बाली, सुग्रीव व अंगद आदि अनेकों का सहयोग मिला था। इसी प्रकार श्री कृष्ण को महान् बनाने में बाबा नन्द, माता यशोदा, माता देवकी, पिता वायुदेव, पांचों पाण्डव, दादा भीष्म, गान्धारी आदि अनेकों का सहयोग मिला था। परन्तु हम यहां उन तीन महापुरुषों की विवेचना करेंगे जिनको उनके किसी एक सदस्य के ही सहयोग ने महान् ही नहीं बल्कि महानतर व महानतम भी बना दिया। वे तीन महापुरुष हैं, शेर शिव जी, स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराज, जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे लिख रहे हैं।

1. शेर शिवा जी-शेर शिवा जी को इतना महान् बनाने का तथा अपने राष्ट्र के प्रति इतना अधिक समर्पित भाव जागृत करने का श्रेय उसकी महान् माता जीजा बाई को जाता है। जीजा बाई ने अपने सुपुत्र शिवा को लौरियों में, गीतों में राष्ट्रीय भावना भरती रहती हैं। यही कारण था कि शिवा जी एक सच्चा राष्ट्रवादी महापुरुष बन गए और अपनी सीमित सैन्य शक्ति से औरंगजेब जैसे अन्यायी, अन्यायकारी, बलवान बादशाह का भी नाकों चने चबा दिए। उसके अनेकों प्रयत्नों के बावजूद भी शिवा जी उसकी पकड़ में नहीं आए और शिवा जी अपना एक छोटा सा हिन्दू राज्य स्थापित करने में सफल हो गए।

2. स्वामी श्रद्धानन्द-स्वामी श्रद्धानन्द जिसका बचपन का नाम मुन्शीराम था। उसका जन्म सन् 1856 में जालन्धर ज़िले के गांव तलवन में हुआ था। उनके पिता नानक चन्द पहले तो फौज में रिसलदार रहे फिर पुलिस कोतवाल बरेली के बना दिये गए। एक कोतवाल का पुत्र होने के कारण उनके पास धन का अभाव नहीं था और ऊपर में सत्ता का अहंकार। इसलिए वह एक बिगडैल बेटा होता गया। दुनिया के सभी अवगुण उनमें घर कर गए और उनका ईश्वर पर विश्वास उठ गया। एक बार बरेली में आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती आ गए और पिता नानक चन्द के कहने से मुन्शीराम स्वामी जी के व्याख्यान सुनने चला गया। वहां उसके हृदय पर स्वामी जी का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उस बिगड़ैल बालक का जीवन ही बदल गया और वह केवल आर्य समाज का ही नहीं बल्कि भारत का वह एक महान् देश सुधारक और एक अग्रणीय नेता बन गया। उन्होंने अपने जीवन में अनेक ऐसे कार्य किए जिनको हर व्यक्ति नहीं कर सकता। जिनमें मुख्य कार्य ये हैं।

2 मार्च 1902 में हरिद्वार के समीप गंगा तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। सर्वप्रथम अपने दो पुत्रों को उसमें प्रविष्ट कराया और अपनी पूरी सम्पत्ति उस गुरुकुल में लगा दी जिसका परिणाम यह निकला कि वह गुरुकुल एक प्रसिद्ध विश्वविद्यालय के रूप में माना जाता है। 15 वर्षों तक उसका सुन्दर संचालन करके 10 अप्रैल, 1917 को सन्यास ग्रहण करके स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। इसने बाद आप पूर्णत: राष्ट्रीय कार्यक्रमों व समाज सुधार के कार्यों में लग गए।

सन्यास धारण करने के बाद आप 30 मार्च 1919 में रोयल एक्ट के विरोध में एक प्रभावशाली और ऐतिहासिक जुलूस निकाला, जिसमें आपने गौरी सेना के सामने अपनी छाती खोलकर गोली चलाने का ऐलान किया। गौरी सेना ने गोली नहीं चलाई और जुलूस आगे बढ़ गया। सन् 1919 में जलियांवाला भीषण काण्ड होने से पंजाब में एक भयावह स्थिति बन गई थी। ऐसी स्थिति में अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बन कर अधिवेशन किया। स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। उन्होंने मुसलमानों की विशाल सभा को 4 अप्रैल 1925 में सम्बोधित किया। जिसको सुनकर मुसलमान नवयुवक बहुत प्रसन्न हुए। यह दिल्ली के इतिहास में एक नई घटना थी। फिर 6 अप्रैल को फतेहपुरी मस्जिद से भाषण दे कर स्वामी जी ने मुसलमानों का दिल जीत लिया। फिर बाद में स्वामी जी अपने आखिरी दिनों में शुद्धि का कार्य करने लगे और उन्होंने हजारों मलकाना राजपूतों तथा अन्य लोगों को शुद्ध करके हिन्दू बनाया, तब कट्टर मुसलमान नाराज़ हो गए और 23 दिसम्बर 1926 को एक अब्दुल रशीद नाम के धर्मान्ध नवयुवक ने गोली मार कर स्वामी जी की हत्या कर दी।

स्वामी जी की धर्मपत्नी जिसका नाम शिव देवी था। वह बड़ी पतिव्रता नारी थीं। जब स्वामी जी अनेकों दुर्गुणों व व्यसनों में फंसे हुए थे, तब वे रात्रि को दो-तीन बजे घर पर आते थे और आकर उल्टी करते थे, तब उनकी धर्मपारायण पत्नी अपने पति का बिना कुछ खाए इन्तज़ार करती थी। आने के बाद उनकी की हुई उल्टी को साफ करके उनको भोजन देती थी। एक दिन स्वामी जी ने उससे पूछ ही लिया कि हे! शिवे क्या तुमने भोजन कर लिया, तब शिव देवी ने कहा, कि हे पतिदेव! आपको भोजन करवाने से पहले, मैं कैसे भोजन कर सकती हूं। यह सुनकर स्वामी जी अवाक् रह गए। इसका असर स्वामी जी पर यह पड़ा कि उन्होंने अपनी सभी बुरी आदतें छोड़ दीं। स्वामी जी ने अपनी जीवनी में स्वयं ने लिखा है कि मेरे जीवन को बदलने में पहला सहयोग स्वामी दयानन्द का है और दूसरा सहयोग मेरी धर्मपत्नी शिव देवी का है। इस प्रकार शिव देवी ने अपनी बिगड़ैल पति को अपने आचरण के द्वारा सुधार कर उसे एक महान् पुरुष बना दिया।

3. कर्मयोगी महात्मा हंसराज-महात्मा हंसराज का जन्म 19 अप्रैल 1864 को बजवाड़ा के एक छोटे से ग्राम में एक निर्धन परिवार में हुआ था। यह कौन जानता था कि यह जन्म लेने वाला बालक आगे चल कर लार्ड मैकाले का प्रवर्त्तक एवं प्रचारक सिद्ध होगा। महात्मा हंसराज को लाहौर के गर्वन्मैंट कॉलेज में अध्ययन करते हुए लाला लाजपत राय व पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी जैसे प्रतिभावान सहपाठी मिल गए। इन तीनों के विचार एक समान थे। तीनों ही विदेशी विचारधारा को समाप्त होता हुआ देखना चाहते थे। इस समय आर्य समाज एक जीवन्त संस्था थी। लाहौर आर्य समाज के प्राण लाला साईंदास जी माने जाते थे। उनका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली और आकर्षक था कि उनके सम्पर्क में आने वाला उनका ही बन जाता था। ये तीनों युवक भी उनके सम्पर्क और संसर्ग में आकर आर्य समाज में आने लगे। सन् 1883 में महर्षि दयानन्द का विषपान से बलिदान हो गया। नाव का खिवैया नाव को मझधार में छोड़कर चला गया। चारों ओर अन्धेरा छा गया। लाहौर के आर्य पुरुषों में महर्षि का एक ऐसा स्मारक बनाने का विचार दिया जो महर्षि के कार्यों की रक्षा के साथ-साथ विस्तार करने वाला भी है। विचारान्तर डी.ए.वी. स्कूल खोलने का निश्चय किया गया। समस्या धन की इतनी नहीं थी जितनी अध्यापन कार्य करने की थी। युवक हंसराज बी. ए. कर चुका था। अपने आचार्य के अधूरे कार्यों को पूरा करने की इसके मन में तड़फ थी। उसने वहां तो अपनी भावना को प्रकट नहीं किया परन्तु अपने अग्र भ्राता मुल्खराज को अपने मन की सब बात बतलाकर उसने आशीर्वाद चाहा। लाला मुलख राज ने अपने छोटे भाई को त्याग और बलिदान के मार्ग पर अग्रसर होते देख, स्वयं को भी उसी राह का राही बना लिया। उन्होंने कहा कि जब तक तुम स्कूल की निष्काम सेवा करना चाहो, तब तक करो। मैं अपने मासिक वेतन 80 रुपयों का आधा भाग तुमको देता रहूंगा और उसने अनेक तकलीफों व कष्टों को सहन करते हुए जीवन भर अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को अपना आधा वेतन देते रहे। यह था मुलखराज का अपने छोटे भाई महात्मा हंसराज को महान् बनाने में सहयोग।

इस प्रकार इन तीनों दृष्टान्तों में शिवा जी की माता जीजा बाई का, स्वामी श्रद्धानन्द की धर्मपत्नी शिव देवी का तथा महात्मा हंसराज के बड़ा भाई लाला मुलखराज का, इन तीनों को महान् बनाने में बड़ा सहयोग रहा। इन तीनों को किसी भी सच्चे भारतीय को भूलना नहीं चाहिए।

Thearyasamaj.org

अथर्ववेद में काल का गुणगान

-ले० शिव नारायण उपाध्याय 73, शास्त्री नगर ढाढाबाड़ी, राजस्थान

काल बड़ा बलवान है। कोई भी प्राणी काल की पकड़ से अपने आप को छुड़ा नहीं सकता है। सजीव का तो कहना ही क्या काल का प्रत्यक्ष प्रभाव तो जड़ वस्तुओं पर भी प्रत्यक्ष दिखता है। केवल पर ब्रह्म परमेश्वर को ही कालातीत माना जाता है। वे काल के प्रभाव से मुक्त हैं। काल निरन्तर प्रवाह में रहता है तथा इसका क्षरण भी नहीं होता है, यह कभी वृद्ध नहीं होता है, न जीर्ण ही होता है। बिना इसके लगे कोई भी कार्य हो नहीं सकता है। काल सृष्टि का पिता है क्योंकि सृष्टि इसी में निर्मित होती है। वह सृष्टि का पुत्र भी है क्योंकि सृष्टि के प्रलय होते समय भी वह रहता है। अथर्ववेद काण्ड 19 के सूक्त 53 व 54 में काल का विस्तृत वर्णन हुआ है। हम उसी के आधार पर कुछ मन्त्रों द्वारा काल के गुणों का वर्णन करते हैं।

कालो अश्वो वहति सप्त-रश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चि-स्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।। अथर्व. 19.53.1

पदार्थ-(सप्तरश्मिः) सात प्रकार की किरणों वाले सूर्य के समान प्रकाशमान (सहस्राक्षः) सहस्त्रों नेत्र वाला (अजरः) वृद्ध न होने वाला (भूरिरेताः) बलशाली (कालः) काल (समयरूपी) (अश्वः) घोड़ा (वहति) चलता रहता है। (तम्) उस पर (कवयः) ज्ञानवान (विपश्चितः) बुद्धिमान लोग (आ रोहन्ति) चढ़ते हैं (तस्य) उस काल के (चक्रा) (अर्थात् घूमने के स्थान) (विश्वा) सब (भुवनानि) सत्ता वाले हैं।

भावार्थ-काल के दो रूप हैं। एक तो वह जिसका माप नहीं लिया जा सकता है, वह तो सृष्टि के प्रारम्भ से ही है और लगातार प्रलय तक रहेगा। बल्कि वह तो प्रलय में भी रहेगा। दूसरा काल का वह रूप जिसे गिना जाता है दिनों, महीनों और वर्षों और क्षणों के रूप में, उसे समय कहा जाता है। समय की माप सूर्य और पृथ्वी की दैनिक गति के कारण ही संभव है। इसलिए मन्त्र में काल के लिए कहा गया है कि सात रंग की किरणों पर आरूढ़ होकर जैसे सूर्य चलता है उसी प्रकार काल भी साथ-साथ चलता है। बुद्धिमान लोग दूसरे काल (समय) का सदुपयोग कर लाभान्वित होते हैं।

सप्त चक्रान वहति काल एष सप्तास्य नाभीरमृतंन्वक्ष-.
स इमा विश्वा भुवनान्यञ्जत् कालः स ईयते प्रथमो नु देवः।। अथर्व. 19.53.2

पदार्थ-यह काल (समय) (सप्त) सात (तीन काल भूत, वर्तमान और भविष्य तथा चार दिशाएं) (चक्रान्) पहियों की (वहति) चलाता है। (अस्य) इसकी (सप्त) ये सात ही (नाभीः) नाभि (पहिये का केन्द्र) है और (अक्षः) इसका धुरा (नु) निश्चय करके (अमृतम्) अमरपन है। (सः) वह (इमा) इन (विश्वा) सब (भुवनानि) सत्ता वालों को (अञ्जत्) प्रखट करता है। (सः काल) वह काल (नु) निश्चय करके (प्रथम्) पहिला (देवः) देवता (ईयते) जाना जाता है।

भावार्थ-काल व्यापक और नित्य है। संसार के सम्पूर्ण कार्य काल से ही सिद्ध होते हैं। मनुष्य को समय का सदुपयोग करके उन्नति करनी चाहिए।

स एव सं भुवनान्याभरत् स एव सं भुवनानि पर्येत्।
पिता सन्नभवत् पुत्र एषां तस्माद् वे नान्यत् परमस्ति तेजः।। अथर्व. 19.53.4

पदार्थ-(सः एव) उसने ही (भुवनानि) सत्ताओं को (सम्) अच्छे प्रकार (आ) सब ओर से (अभरत्) पुष्ट किया है। (सः एव) उसने ही (भुवनानि) सत्ताओं को (सम्) अच्छे प्रकार (परि एतु) घेर लिया है। वह (एषाम्) इन सत्ताओं का (पिता) पिता (सन्) होकर (पुत्रः) पुत्र (पुत्र समान पीछे) (अभवत्) हुआ है। (तस्मात्) उससे (परम्) बड़ा (अन्यत्) दूसरा (तेजः) तेज (सृष्टि में) (वै) निश्चय करके (न) नहीं (अस्ति) है।

भावार्थ-काल सब सत्ताओं में व्यापक है और उसी में सब सत्ता उत्पन्न होती है इसलिए वह उनका पिता भी है। सृष्टि के अन्त में भी वही रहता है इसलिए उसे पुत्र भी कहते हैं। उससे बड़ा या उसके समान तेज धारी सृष्टि में और कोई दूसरा नहीं है।

कालऽभूं दिवमजनयत् काल इमाः पृथिवीरूत।
काले ह भूतं भव्यं चेषितं ह वि तिष्ठते।। अथर्व. 19.53.5

पदार्थ-(कालः) काल (समय) ने (अभूम्) उस (दिवम्) आकाश को (उत) और (कालः) काल ने (इमाः) इन (पृथिवीः) पृथ्वियों को (अजनयत्) उत्पन्न किया है। (काले) काल में (ह) ही (भूतम्) बीता हुआ (च) और (भव्यम्) होने वाला (इषितम्) प्रेरणा हुआ (ह) ही (वि) विशेष करके (तिष्ठते) ठहरता है।

भावार्थ-काल को पाकर ही यह आकाश और पृथ्वी आदि लोक उत्पन्न हुए हैं और भूत, वर्तमान और भविष्यत भी काल के भीतर ही हैं। कोई भी कार्य बिना काल के लगे नहीं होता है।

कालो भूतिमसृजत काले तपति सूर्यः।
काले ह विश्वा भूतानि काले चक्षुर्विपश्यति।। अथर्व. 19.53.6

पदार्थ-काल (समय) ने ऐश्वर्य को उत्पन्न किया है, काल (समय) से ही सूर्य तपता है। काल में ही सब सत्ताएं हैं। काल में ही आंख देखती है।

काले मनः काले प्राणः काले नाम समाहितम्।
कालेन सर्वा नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः।। अथर्व. 19.53.7

भावार्थ-काल के सदुपयोग से मन और प्राण अर्थात् सब इन्द्रियों का स्वास्थ्य और यश बढ़ता है। तभी सब प्राणी सुख पाते हैं।

कालः प्रजा असृजत कालो अग्रे प्रजापतिम्।
स्वयंभूः कश्यपः कालात् तपः कालादजायत।। अथर्व. 19.53.10

पदार्थ-पहले काल ने प्रजाओं को और काल ने प्रजापति को उत्पन्न किया है। काल से (स्वयंभू) अपने आप उत्पन्न होने वाला कश्यप परमात्मा और काल से तप आदि उत्पन्न हुआ है।

कालादापः समभवन् कालाद् ब्रह्म तपो दिशः।
कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः।। अथर्व. 19.54.1

पदार्थ-(कालात्) काल (गिनती वाले समय) से (आपः) प्रजाएं (कालात्) समय से (ब्रह्म) वेद ज्ञान (तपः) तप और (दिशः) दिशाएं (सम् अभवन्) उत्पन्न हुई हैं। (काले) काल के साथ (सूर्यः) सूर्य (उत् एति) निकलता है (काले) काल में (पुनः) फिर (नि विशते) डूब जाता है, अस्त हो जाता है।

कालेन वातः पवने कालेन पृथिवी मही।
द्यौर्मही काल आहिताः।। अथर्व. 19.54.2

पदार्थ-काल में ही पवन शुद्ध करता है। काल के साथ ही पृथ्वी बड़ी है। काल में ही बड़ा आकाश रखा है।

कालो ह भूतं भव्यं च पुत्रो अजनयत् पुरा।
कालादृचः समभवन् यजुः कालाद्जायत।। ऋ. 19.54.3

पदार्थ-काल रूपी पुत्र ने ही भूतकाल और भविष्य काल को उत्पन्न किया है। काल से ही ऋचाएं उत्पन्न हुई हैं, काल से ही यजुर्वेद उत्पन्न हुआ है।

कालो यज्ञं समेरयद् देवेभ्यो भगमक्षितम्।
काले गन्धर्वाप्सरसः काले लोकाः प्रतिष्ठिताः।। अथर्व. 19.54.4

भावार्थ-समय के सदुपयोग से विद्वान लोग सत्कर्म करके सदगति पाते हैं और काल से ही संसार के साथ पदार्थ ठहरे हैं।

Thearyasamaj.org

गुरुकुल खेड़ा खुर्द में अध्यापक की आवश्यकता

गुरुकुल खेड़ा खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 6 से लेकर शास्त्री तक के छात्रों को अग्रेजी, विज्ञान, हिन्दी व गणित पढ़ाने के लिए एवं बच्चों की देखरेख करने हेतु संरक्षक की आवश्यकता है। वेतन के साथ-साथ भोजन, वस्त्र, दूध आदि की सुविधा दी जाती है।

इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करे। **-प्राचार्य आचार्य सुधांशु**

मन्त्र गीत-

मौन कथन

-ले० देवातिथि देव नारायण भारद्वाज रामघाट मार्ग, अलीगढ़

हो रहा सदन में सखा मिलन।
तुम सुनो हृदय के सखा वचन।
प्रभु सखा साथ में रहते हैं।
हर कृत्य तुम्हारे सहते हैं।
सतक्रियाशील हर मानव हो,
हर समय वचन यह कहते हैं।
तुम प्रभु वचनों का करो मनन।
तुम सुनो हृदय के सखा वचन।।१।।
रे जोत देह रथ अश्व अभी।
इसमें प्रमाद हो नहीं कभी।
मृदु सुधा तुल्य व्यवहार वान,
हो प्रभा पुंज सद्गुणी सभी।
हे आत्म करो परमात्म यजन।
तुम सुनो हृदय के सखा वचन।२।।
प्रभु के द्विव् पृथिवी वे ही हैं।
नर के जो मस्तक देही है।
अपमान न कर विद्वानों का,
तेरे सर्वोदय स्नेही है।
तुम करो विप्र भगवान नमन।
तुम सुनो हृदय के सखा वचन।३।।
स्रोत-श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथममृतस्य द्रवित्नुम।
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामय भूरिह स्याः।।
(अथर्व० 18.1.25)

आर्य समाज सान्ताक्रुज में विद्वान्/ प्रचालक/पुरोहित की आवश्यकता

आर्य जगत में अपना एक विशेष स्थान रखने वाली आर्य समाज सान्ताक्रुज को अपनी धार्मिक गतिविधियों के विस्तार हेतु सद् गृहस्थ-विद्वान/प्रचारक/पुरोहित की आवश्यकता है। वेद प्रचार के पुनीत कार्य में अपनी सेवाएं देने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें। मिशनरी भावना के महानुभावों को प्राथमिकता दी जाएगी। **-महामन्त्री**

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज सरहिन्द जिला पटियाला में एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। जो वैदिक रीति रिवाज अनुसार हवन यज्ञ करवा सके। निवास की निशुल्क व्यवस्था होगी। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जायेगी। सम्पर्क

लव कुमार सूद
प्रधान
आर्य समाज सरहिन्द

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज अबोहर में एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। जो वैदिक रीति रिवाज अनुसार हवन यज्ञ करवा सके। निवास की निशुल्क व्यवस्था होगी। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जायेगी। सम्पर्क

सोहन लाल सेतिया
प्रधान
आर्य समाज अबोहर

पृष्ठ 4 का शेष-यज्ञ समिधा.....

शतपथ ने उसी मन्त्र से समिधाओं पर जलसिंचन का विधान किया है। जैसे चावल साफ-सुथरे चाहिए, वैसे ही समिधाएं भी तो चाहिएं।

परन्तु यह विद्वद्वर्ग शतपथ के इस वचन को न मानकर क्या कन्नी नहीं काट गया ? उनकी लेखनी यहां पर क्यों कुण्ठित हो गई ? शतपथ का यह वचन उनके ध्यान में क्यों नहीं आया ? अथवा इसकी उपेक्षा कर दी ?

श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द त्रिवेदतीर्थ जी को चाहिए था कि आर्यों को इस भूल की ओर भी इंगित करते और समिधाओं के अभिषिञ्चन का भी विधान करते।

उन विद्वानों के लिए भी यह एक बहुत बड़ी चुनौती है जो आचमन मन्त्रों को महर्षि द्वारा निर्देशित स्थान से हटा कर 'ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना' से पूर्व ले जाने का उपक्रम किया। क्योंकि उनके सामने ''आचान्तेन कर्म कर्त्तव्यम्'' (मीमांसा शाबर भाष्य 1/3/5 का प्रमाण सम्मुख था। वस्तुत: शतपथ ब्राह्मण की अपेक्षा मीमांसा ग्रंथ अर्वाचीन है और भाष्यकर्त्ता शाबर मीमांसा से और भी परवर्ती सत्यार्थ प्रकाश तृतीय सम्मुलास में महर्षि दयानन्द मीमांसा पर व्यास मुनिकृत व्याख्या को ही प्रमाणिक माना है। शाबर को नहीं।... आर्षग्रन्थों को पढ़ना ऐसा है कि एक गोता लगाना, बहुमूल्य मोतियों का पाना।'' अत: शाबर का भाष्य आर्ष कहां तक है, इस पर अवश्य ही प्रश्न चिन्ह लग जाता है और आचान्त समर्थक विद्वानों पर भी। फिर विद्वान् समिधा अभिषिञ्चन हेतु उपर्युक्त उद्धरण को प्रमाणिक क्यों नहीं मानते ?

एतादृश विद्वानों को चाहिए कि महर्षि की आचमन विधि को उनके द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर ही रहने दें अथवा समिधादान से पूर्व समिधाओं का अभिषिञ्चन भी प्रारम्भ कर दें क्योंकि मीमांसा शाबर भाष्य से शतपथ ब्राह्मण अधिक प्रमाणिक और प्राचीनतम है। साथ ही यह तो साक्षात् यजुर्वेद 2/1 का वेदमन्त्र भी है। इससे अधिक प्रामाणिकता भला और क्या चाहिए? क्या वेदों को प्रामाणिक नहीं मानते ? महर्षि ने-

ओम् अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षमि।।
यजु. २/१

मन्त्र को चावल धोने के लिए विनियोग किया है तो शतपथकार ने इसी वेदमन्त्र के एक अंश-

ओम् कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।। यजु. २/१

मन्त्र का चावल धोने के लिए विनियोग किया है तो शतपथकार ने इसी वेदमन्त्र के एक अंश-

ओम् कृष्णोऽस्याखरेष्ठोऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि।। का समिधा अभिषिंचन हेतु विनियोग किया है। दोनों के मन्त्रांश एक ही वेदमन्त्र यजु. २/१ के हैं।

अत: समिधाओं के अभिषिञ्चन हेतु प्रमाण रूप में प्रयुक्त किए गए मन्त्र में भी दम है।

यदि नहीं तो 'आचान्तेन कर्म कर्त्तव्यम्' को भी अप्रामाणिक मानकर महर्षि की आचमन विधि हेतु निर्दिष्ट मन्त्रों को यथास्थान ही रहने देना चाहिए।

ऐसे कितने ही उद्धरण उद्धृत कर महर्षि की विधि में परिवर्तन किया जा सकता है, जो अनुचित है।

आशा है विद्ववर्ग मेरे विचारों से सहमत होगा। सहमति-असहमति हेतु प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति का हार्दिक स्वागत है।

आर्य समाज मन्दिर चौक पटियाला का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर चौक आर्य समाज पटियाला का वार्षिक चुनाव दिनांक 31 मई 2015 को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य श्री लव कुमार सूद जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री राज कुमार सिंगला जी को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किया गया और उन्हें कार्यकारिणी मनोनीत करने का अधिकार दिया गया। उन्होंने अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए जिन अधिकारियों को नियुक्त किया उनकी सूची इस प्रकार है-:

प्रधान-श्री राज कुमार सिंगला, उपप्रधान- श्री वीरेन्द्र सिंगला, श्री शैलेन्द्र मैहरा, श्री कर्नल आनन्द मोहन सेठी, मन्त्री- श्री वेद प्रकाश तुली, उपमन्त्री- श्री अरूण कुमार, कोषाध्यक्ष- श्री जितेन्द्र आर्य, प्रचार मन्त्री- श्री विजेन्द्र शास्त्री, पुस्कालयाध्यक्ष- श्री गुलाब सिंह, स्टोर प्रभारी- श्री हर्ष वर्धन नियुक्त किए गए। श्री भूपेन्द्र राय और श्रीमती संगीता सिंगला को सदस्य नियुक्त किया गया। विशेष आमन्त्रित सदस्यों में श्री यशपाल जुनेजा, श्रीमती सुमन कोछड़, श्री सोम प्रकाश, श्री सुदर्शन कुमार, श्री रमेश गन्डोत्रा, श्री प्रवीण कुमार, प्रिं. श्री निखिल रंजन शास्त्री को रखा गया। **-वेद प्रकाश तुली मन्त्री आर्य समाज**

Thearyasamaj.org

वेदवाणी

विशाल बाहु परमेश्वर को अपनी रक्षा के लिए पुकारते हैं

बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये।
साधु कृवन्तमवसे।। –ऋ० ८।३२।१०

ऋषि–काण्वो मेधातिथि:।। **देवता**–इन्द्र:। **छन्द:**–गायत्री।

विनय–हे परमेश्वर! हम तुम्हें रक्षा के लिए पुकारते हैं। इस संसार में बहुत से क्लेश, दु:ख और आपत्तियां हम पर आती हैं। बहुत से भय उपस्थित होते रहते हैं। उस समय में हे परमेश्वर! हम तुम्हें ही याद करते हैं। तुम्हारे सिवाय क्लेश में हम और किसे पुकारें? क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हीं एकमात्र रक्षक हो। जब तुम रक्षा करना चाहते हो तो सैंकड़ों विपत्तियों के बादलों को क्षण भर में उड़ा देते हो, सैकड़ों बन्धनों को एकक्षण में काट देते हो। जहां रक्षा का कोई भी उपाय दिखाई नहीं देता, अन्तिम नाश ही दिख रहा होता है, बच जाने की जहां हम कोई कल्पना तक नहीं कर सकते, वहां पर भी तुम्हारे अदृश्य हाथ पहुंचे हुए हमारी रक्षा कर देते हैं। तुम्हारे रक्षा करने वाले हाथ प्रत्येक स्थान पर और प्रतिक्षण पहुंचे हुए हैं। इसलिए हे सृप्रकरस्न! हम कभी भी आशा नहीं छोड़ते कि तुम हमें बचा न लोगे, अत: हम तुम्हें पुकारते जाते हैं। तुम यदि रक्षा नहीं करते तो भी हम अशान्त नहीं होते, क्योंकि हम जानते हैं कि तुम्हारी अरक्षा में भी रक्षा छिपी होती है। हे देव! हमें अटल विश्वास है कि तुम कल्याण ही करने वाले हो। तुमसे अकल्याण कभी हो ही नहीं सकता। हम नहीं समझ पाते हैं कि स्पष्ट दिखने वाली अमुक आपत्ति किस प्रकार कल्याण के रूप में बदल जाएगी, हमारा विनाश कैसे भलाई का लाने वाला होगा, परन्तु अनुभवों द्वारा अन्तस्थल पर यह विश्वास निहित है कि तुम अपनी प्रत्येक घटना द्वारा हम लोगों का भला ही कर रहे हो और अन्तत: तुम हमारी पालना करोगे, हमें बचा लोगे। हमारा अत्यन्त विनाश तुम कभी नहीं होने दे सकते, अत: हम तुम्हें ही रक्षा के लिए पुकारते हैं। सदा ऐसे विलक्षण ढंग से सबका कल्याण करते हुए तुम हमारी निश्चित रक्षा करने वाले हो। हमारे कल्याण के लिए अपने रक्षक बाहुओं को प्रत्येक क्षण में और प्रत्येक स्थान में फैलाए बैठे हो। तुम्हारे सिवाय मनुष्य के लिए और कौन स्तुत्य है ? मनुष्य और किसके गीत गाए ? तुम्हारी ही स्तुति कर वह अपनी वाणी को कृतकृत्य कर सकता है।

–वैदिक विनय से साभार

श्री लव कुमार सूद सर्वसम्मति से दुबारा प्रधान चुने गए

आर्य समाज मन्दिर, सरहिन्द का वर्ष 2015–16 का वार्षिक चुनाव दिनांक 30 मई 2015 को सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री लव कुमार सूद को फिर से सर्वसम्मति से प्रधान चुन लिया गया। उन्हें दूसरे पदाधिकारियों के चयन का जिम्मा भी दिया गया।

आर्य समाज के लगभग सभी सदस्य मौजूद थे, जिनमें श्री प्रो. बलराज सूद, राकेश सूद, अमरजीत सूद, रमेश कुमार सूद, एडवोकेट अमन सूद, सुशील सूद, अशोक सूद, अनु सूद, मोहित सूद, मनु सूद, लव कुमार सूद, जगनरेश सूद, अतुल सूद, नवनीत वर्मा व अन्य मौजूद थे। श्री सुधीर सूद, नीरज सूद आदि ने फोन पर अपनी सहमति जताई। श्री योगराज सूद जी ने बाद में मिल कर अपनी सहमति का इजहार किया।

–जगनरेश सूद (मन्त्री)

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली–6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।